नरक गति कारण–निवारण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

चौरासी लाख जीव योनियों में सभी प्राणी जीवनयापन करते हैं। इनमें जीवित प्राणियों की संख्या अनन्त है। जीव की चार गतियां हैं– नारक, तिर्यंच, मनुष्य और देवगति। मुक्ति की अवस्था इन सबसे परे है। आत्मा न तो बढ़ती और न घटती है। आत्मा त्रैकालिक है। परमाणु जड़ है। ये इतने सूक्ष्म हैं कि अवधिज्ञानी और केवलज्ञानी ही इन्हें देख सकते हैं। नरक गति का करण क्या है? बिना कारण के कार्य नहीं होता। व्यक्ति का जीवन आयुष्य के अधीन है। आयुष्य क्षीण हो जाने पर मृत्यु हो जाती है। मृत्यु के समय जीव और शरीर का सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है। जो जैसा कर्म किये रहता है वैसा फल प्राप्त करने के लिए इन चारों गतियों में भटकता रहता है। जो सत्कर्म करता है उसे अच्छी गति प्राप्त होती है। जो दुष्कर्म करता है उसे बुरी गति प्राप्त होती है। गतियों में आना–जाना कर्म पर निर्भर है। बिना भुगते कर्म नष्ट नहीं होते। अतः मानव को सत्कर्म करना चाहिए।

जन्म और मृत्यु शाश्वत सत्य है। प्रश्न उठता है कि जन्म और मृत्यु आत्मा का होता है या शरीर का? आत्मा अजर–अमर अविनाशी है। आत्मा न तो मरता है और न जन्म लेता है। यह शाश्वत है। शरीर ही जन्म मृत्यु के चक्कर में पड़ता है। जन्म और मरण से आत्मा का अस्तित्व नहीं मिलता। ये तो आत्मा की अवस्थाएं हैं। सांसारिक जीवों की मुख्य चार भव स्थितियां है– नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति और देव गति। मानव अपने जीवन में किये हुए जीवन का परिणाम इस जीवन में या अगले जीवन में अवश्य प्राप्त करता है। जीव अपने किये हुए कर्मों के अनुसार एक गति से दूसरे गति में परिवर्तित होते रहते हैं। एक ही जीव अच्छे या बुरे कर्म के अनुसार कभी मनुष्य, कभी देवता, कभी तिर्यंच और कभी नरक गति में जन्म ग्रहण करता है। अच्छे कर्मों के परिणामस्वरूप जीव देवगति और मनुष्य गति में जन्म पाता है और बुरे कर्म के परिणामस्वरूप जीव तिर्यंच और नरक गति में जन्म ग्रहण करता है।

मनुष्य पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े, वृक्ष आदि औदारिक शरीर वाले होते हैं। इस शरीर की रचना स्थूल पुद्गलों से होती है। मोक्ष की प्राप्ति औदारिक शरीरों से हो सकती है। औदारिक शरीर में हाड़, मांस, रक्त, वसा, मज्जा आदि होते हैं। देवता और नारकीय जीवों का वैक्रिय शरीर होता है। शरीर को छोटा करना, बड़ा करना, सूक्ष्म करना, स्थूल करना आदि क्रियाएं वैक्रिय शरीर से कि जा सकती है। चतुर्दश पूर्वों के ज्ञाता साधु आवश्यक कार्य या सत्य को जानने के लिए जो शरीर धारण करते हैं, वह आहारक शरीर है। जो शरीर आहार आदि को पचाने में सहायक है और जो तेजोमय है, वह तैजस कार्मण शरीर है। यह सभी संसारी जीवों का शरीर कहलाता है। यह शरीर तब तक रहता है, जब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो जाती। औदारिक शरीर जन्मसिद्ध होता है। वैक्रिय शरीर जन्मसिद्ध और लब्धि दोनों प्रकार का होता है। आहारक शरीर योगशक्ति से प्राप्त होता है।

प्रवाह रूप से आत्मा और शरीर का संबंध अनादि है, किन्तु व्यक्ति रूप से सादि। औदारिक वैक्रिय और आहारक शरीर के अंगोपांग होते हैं, शेष शरीरों के नहीं होते हैं। तैजस और कार्मण शरीर अत्यंत सूक्ष्म होते हैं। ये दो शरीर सभी संसारी जीवों के प्रवाह रूप से सदैव रहते हैं। औदारिक आदि शरीरों में परिवर्ततन होता रहता है। हमारा जीवन चार गतियों भ्रमण करता रहता है। नारक, तिर्यंच, मनुष्य, देव ये चार गतियां हैं। चौरासी लाख जीव योनियां हर गति में जीव ग्रहण करती हैं। जो जीव जैसा कर्म करता है, उसे वैसी गति प्राप्त होती है।

नारकीय का अर्थ है नरक गति। इसमें जीव क्यों जाता है? किन कर्मों के कारण नरक गति प्राप्त होती है? मनुष्य ही नरक गति में जाता है। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय जीव इसमें नहीं जाते। महापरिग्रह, हिंसात्मक कार्य करना, पंचेन्द्रिय जीवों का वध करना, मांसाहार का सेवन करना या इसी प्रकार के अन्य जघन्य कृत्य करने से जीव नरकायुष्य कार्मण शरीर प्रायोग्य बंध करता है। नरक योनि के जीव को अनेक यातनाएं भोगनी पड़ती है। नरक लोक पृथ्वी के भीतर है। इसमें जन्म लेने वाले जीव का शरीर मोम की तरह होता है। नारकीय और देवगति वाले जीव वैक्रिय शरीरधारी होते हैं। नारकीय जीवों को आयुष्यकाल लम्बा होता है। पुण्य और पाप सर्वविदित तत्व हैं।

पुण्य और पाप की व्याख्या सभी धर्मों के आचार अपने प्रवचनों में करते हैं। प्रवचन का मुख्य उद्देश्य लोगों में आत्मभावना जागृत करना रहता है। जो आत्मा को जानता है और मानता है वह बुरा कर्म नहीं करता। उसे यह भय रहता है कि बुरे कर्म का परिणाम भी बुरा होता है और अच्छे कर्म का परिणाम अच्छा। पुण्य और पाप अच्छे और बुरे कर्मों के फल हैं। यदि आदमी अच्छा कर्म करता है तो उसे पुण्य की प्राप्ति होती है और यदि बुरा कर्म करता है तो उसे पाप का भागी बनना पड़ता है। पुण्य एवं पाप मानव सापेक्ष है। कोई कार्य किसी के लिए पुण्य होता है और किसी के लिए पाप। किन्तु यदि समग्र दृष्टि से देखा जाये तो पुण्य और पाप का संबंध नैतिकता और अनैतिकता से भी है। जितने भी नैतिक कार्य हैं, वे पुण्य हैं और जितने अनैतिक कार्य हैं वे पाप हैं। पाप और बुरे कर्म को करने से जीव नरक गति को जाता है। अतः इससे मुक्ति के लिए जीव को सत्कर्म करना चाहिए।